Date	Publication	Page No.	Edition
19.5.2021	Rajasthan Patrika	2	National

रोग के लक्षणों और क्वारंटीन प्रोटोकॉल के बारे में जागरूक रहें

गांवों में कोरोना नियंत्रण के लिए त्वरित कदम जरूरी

संक्रमण के कारण श्वास की समस्या वाले रोगियों के लिए मोबाइल मेडिकल वैन, ऑक्सीजन और एम्बुलेंस की व्यवस्था की जाए

कोरोना अब भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में भी पैर पसार चुका है। ग्रामीण क्षेत्रों के कई गांवों में स्वास्थ्य केंद्र तक नहीं हैं। जहां स्वास्थ्य केंद्र हैं भी, वहां वायरस के प्रसार को रोकने के लिए आवश्यक सुविधाएं नहीं हैं। इनमें से कई केंद्रों में बुनियादी दवाइयां, पल्स ऑक्सीमीटर और थर्मल स्कैनर जैसे बुनियादी परीक्षण उपकरण नहीं हैं। आरटी-पीसीआर या रैपिड एंटीजन परीक्षण करने जैसी सुविधाएं नहीं हैं। कई केंद्रों में डॉक्टर, नर्स व अन्य चिकित्सा कर्मचारियों के पद रिक्त हैं। यानी गांवों में कोविड-19 से लड़ने की पूरी तैयारी करना अभी बाकी है। कोरोना प्रभावित गांवों को चिह्नित कर उन्हें कोरोना मुक्त गांवों से अलग किया जाना चाहिए। राजस्थान में आशा, एएनएम और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की एक टीम को क्षेत्रवार स्क्रीनिंग का काम सौंपा गया है। इसके अतिरिक्त, पिछले दो महीनों में किसी गांव में हुई मौतों की संख्या के बारे में सरपंचों से रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए टेलीफोन या संदेश सेवाओं का उपयोग किया जाना चाहिए। गांवों में स्क्रीनिंग और परीक्षण की संख्या में तेजी से वृद्धि होनी चाहिए।

मोनिका चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर,
आइआइएचएमआर
यूनिवर्सिटी

गांवों में लोग कोरोना के शुरुआती लक्षणों को नजरअंदाज करते हैं। रोग के शुरुआती लक्षण और क्वारंटीन प्रोटोकॉल के बारे में रेडियो और टेलीविजन के माध्यम से जागरूकता पैदा की जानी चाहिए। गांवों में स्कूल शिक्षकों और सेवानिवृत्त सेना के अधिकारियों को काम सौंपा जाना चाहिए। जागरूकता बढ़ाने के लिए स्थानीय भाषा में वीडियो और डिजिटल पोस्टर के माध्यम से मोबाइल कैम्पेन चलाए जाने चाहिए। गांवों में लोग छिपाते हैं कि उनके परिवार में किसी को कोरोना है। ऐसे परिवारों को परामर्श देने के लिए ठोस कवायद जरूरी है। यह महत्त्वपूर्ण है कि संक्रमित गांवों के निवासी दूसरे क्षेत्रों की यात्रा न करें। दुनिया के बाकी हिस्सों में ग्रामीण क्षेत्रों में वायरस के प्रसार को समुदाय के प्रत्येक नागरिक की टेस्टिंग से नियंत्रित किया जा रहा है। आस-पास के क्षेत्र में पॉजिटिव मामले मिलते ही बड़े पैमाने पर टेस्टिंग की जाती है। भारत में भी सभी निवासियों का रैपिड एंटीजन या आरटी-पीसीआर परीक्षण करने के लिए गांवों में एम्बुलेंस या मोबाइल वैन भेजी जा सकती है, खासतौर पर ऐसे गांवों में, जहां मौतों की संख्या ज्यादा है। जिन गांवों में बड़ी संख्या में मामले पाए जाते हैं, वहां सख्त लॉकडाउन लगाया जाना चाहिए।

बीमारी के शुरुआती चरणों से निपटने और जीवन बचाने के लिए स्थानीय स्तर पर दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना महत्त्वपूर्ण है। घर पर उपचार के लिए रोगियों के साथ टेली-परामर्श ने शहरी क्षेत्रों में बहुत अच्छा काम किया है। इंटरनेट कनेक्टिविटी कम होने और डॉक्टरों के फोन नंबर उपलब्ध नहीं होने के कारण ग्रामीणों के लिए ऐसी सेवा देने में बाधाएं आ सकती हैं। परामर्श देने वाले चिकित्सकों की सूची का प्रसार किया जाना चाहिए। इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में डॉक्टरों को टेलीफोनिक कॉल करने के लिए स्वयंसेवकों का एक समूह बनाया जा सकता है।

कोरोना संक्रमण के कारण श्वास की समस्या वाले रोगियों के लिए मोबाइल मेडिकल वैन, ऑक्सीजन और एम्बुलेंस सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। मरीजों की देखभाल के लिए अस्थायी अस्पताल गांवों के स्कूलों में बनाए जा सकते हैं, जो छुट्टियों के चलते अभी उपलब्ध हैं। दवाओं, मास्क, सैनिटाइजर और रैपिड एंटीजन टेस्ट किट की आपूर्ति के लिए सीएसआर फंडिंग, स्थानीय दान या क्राउड फंडिंग का सहारा लिया जा सकता है। सरकार को परीक्षण और चिकित्सा शिविर आयोजित करने, दवाओं के वितरण चैनलों की स्थापना और छोटे शहरों में मेकशिफ्ट अस्पताल बनाने के लिए त्वरित कदम उठाने होंगे।